# परिशिष्टव्याकरणम्

किसी भी भाषा का अध्ययन उसके व्याकरण ज्ञान के बिना अधूरा है। अतः इसका ध्यान रखते हुए कक्षा 8वीं के छात्रों के लिये निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार व्याकरण के निम्न अंशों का अध्ययनार्थ उल्लेख किया गया है।

## संज्ञा

QMBQTG

### हलन्तशब्द

### नकारान्त् (अन् से अन्त होने वाले शब्द)

#### पुल्लिङ्ग

#### राजन्

| विभक्ति | | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|---|
| प्रथमा | (कर्ता) | राजा | राजानौ | राजानः |
| द्वितीया | (कर्म) | राजानम् | ‘‘ | राज्ञः |
| तृतीया | (करण) | राज्ञा | राजभ्याम् | राजभिः |
| चतुर्थी | (सम्प्रदान) | राज्ञे | ‘‘ | राजभ्यः |
| पञ्चमी | (अपादान) | राज्ञः | ‘‘ | ‘‘ |
| षष्ठी | (सम्बन्ध) | ‘‘ | राज्ञोः | राज्ञाम् |
| सप्तमी | (अधिकरण) | राज्ञि, राजनि | ‘‘ | राजसु |
| सम्बोधन | | हे राजन् | हे राजानौ | हे राजानः |

इसी प्रकार महिमन्, गरिमन्, सुनामन् आदि शब्दों के रूप होते हैं।

#### आत्मन् (आत्मा)

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | आत्मा | आत्मानौ | आत्मानः |
| द्वितीया | आत्मानम् | ‘‘ | आत्मनः |
| तृतीया | आत्मना | आत्मभ्याम् | आत्मभिः |
| चतुर्थी | आत्मने | ‘‘ | आत्मभ्यः |
| पञ्चमी | आत्मनः | ‘‘ | ‘‘ |
| षष्ठी | ‘‘ | आत्मनोः | आत्मनाम् |
| सप्तमी | आत्मनि | ‘‘ | आत्मसु |
| सम्बोधन | हे आत्मन् | हे आत्मानौ | हे आत्मानः |

ब्रह्मन् (ब्रह्मा), अश्मन् (पत्थर) अध्वन् (मार्ग) आदि शब्दों के रूप भी इसी प्रकार होते हैं।

#### नपुंसकलिङ्ग

#### नामन्

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | नाम | नाम्नी, नामनी | नामानि |
| द्वितीया | ‘‘ | ‘‘ | ‘‘ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| तृतीया | नाम्ना | नामभ्याम् | नामभिः |
| चतुर्थी | नाम्ने | ,, | नामभ्यः |
| पञ्चमी | नाम्नः | ,, | ,, |
| षष्ठी | ,, | नाम्नोः | नाम्नाम् |
| सप्तमी | नाम्नि, नामनि | ,, | नामसु |
| सम्बोधन | हे नाम, नामन् | हे नाम्नी, नामनी | हे नामानि |

इसी प्रकार व्योमन् (आकाश), धामन् (घर), सामन् (सामवेद का मन्त्र),प्रेमन् (प्यार), दामन् (रस्सी) आदि शब्दों के रूप होते हैं।

## तकारान्त् (अत् से अन्त होने वाले शब्द)

### पुल्लिङ्ग

### भगवत् (भगवान)

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | भगवान् | भगवन्तौ | भगवन्तः |
| द्वितीया | भगवन्तम् | ,, | भगवतः |
| तृतीया | भगवता | भगवद्भ्याम् | भगवद्भिः |
| चतुर्थी | भगवते | ,, | भगवद्भ्यः |
| पञ्चमी | भगवतः | ,, | ,, |
| षष्ठी | ,, | भगवतोः | भगवताम् |
| सप्तमी | भगवति | ,, | भगवत्सु |
| सम्बोधन | हे भगवन् | हे भगवन्तौ | हे भगवन्तः |

धीमत् (बुद्धिमान्), बुद्धिमत् (बुद्धिमान्), विद्यावत् (विद्यावान्), भवत् (आप), श्रीमत् (श्रीमान्), एतावत् (इतना), कियत् (कितना) आदि शब्दों के रूप भगवत् के समान ही होते हैं।

कुर्वत्, धावत्, पठत् आदि शतृ प्रत्यान्त शब्दों के रूप भी इसके समान होते हैं। केवल प्रथमा एक वचन में न के पूर्व ह्रस्व होगा, जैसे – कुर्वन्, धावन्, पठन् आदि।

## सकारान्त्

### पुल्लिङ्ग

### विद्वस् (विद्वान्)

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | विद्वान् | विद्वांसौ | विद्वांसः |
| द्वितीया | विद्वांसम् | ,, | विदुषः |
| तृतीया | विदुषा | विद्वद्भ्याम् | विद्वद्भिः |
| चतुर्थी | विदुषे | ,, | विद्वद्भ्यः |
| पञ्चमी | विदुषः | ,, | ,, |
| षष्ठी | ,, | विदुषोः | विदुषाम् |

| | | | |
|---|---|---|---|
| सप्तमी | विदुषि | " | विद्वत्सु |
| सम्बोधन | हे विद्वन् | हे विद्वांसौ | हे विद्वांसः |

श्रेयस् (अच्छा), कनीयस् (छोटा), ज्यायस् (बड़ा), प्रेयस् (प्यारा) आदि शब्दों के रूप विद्वस् वत् होते हैं।

### नपुसंकलिङ्ग

### पयस् (दूध या पानी)

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | पयः | पयसी | पयांसि |
| द्वितीया | " | " | " |
| तृतीया | पयसा | पयोभ्याम् | पयोभिः |
| चतुर्थी | पयसे | " | पयोभ्यः |
| पञ्चमी | पयसः | " | " |
| षष्ठी | " | पयसोः | पयसाम् |
| सप्तमी | पयसि | " | पयःसु, पयस्सु |
| सम्बोधन | हे पयः | हे पयसी | हे पयांसि |

इसी प्रकार मनस् (मन), अम्भस् (जल), नभस् (आकाश), सरस् (तालाब, तमस् (अन्धकार), वयस् (उम्र), वक्षस् (छाती), उरस् (छाती), यशस् (यश), वचस् (वचन), सिरस् (सिर), तपस् (तप), रजस् (धूल), अयस् (लोहा), चेतस् (चित्त), छन्दस् (छन्द), वासस् (वस्त्र), एनस् (पाप), ओकस् (गृह) इत्यादि शब्दों के रूप होते हैं।

## ऋकारान्त्

### मातृ–स्त्रीलिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | माता | मातरौ | मातरः |
| द्वितीया | मातरम् | " | मातॄः |
| तृतीया | मात्रा | मातृभ्याम् | मातृभिः |
| चतुर्थी | मात्रे | " | मातृभ्यः |
| पञ्चमी | मातुः | मातृभ्याम् | " |
| षष्ठी | " | मात्रोः | मातॄणाम् |
| सप्तमी | मातरि | " | मातृषु |
| सम्बोधन | हे मातः | हे मातरौ | हे मातरः |

इसी प्रकार दुहितृ (पुत्री) शब्द का रूप बनेगा।

### स्वसृ–स्त्रीलिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | स्वसा | स्वसारौ | स्वसारः |

| | | | |
|---|---|---|---|
| द्वितीया | स्वसारम् | " | स्वसृः |
| तृतीया | स्वस्रा | स्वसृभ्याम् | स्वसृभिः |
| चतुर्थी | स्वस्रे | " | स्वसृभ्यः |
| पञ्चमी | स्वसुः | " | " |
| षष्ठी | स्वसुः | स्वस्रोः | स्वसृणाम् |
| सप्तमी | स्वसरि | " | स्वसृषु |
| सम्बोधन | हे स्वसः | हे स्वसारौ | हे स्वसारः |

## सर्वनाम

पूर्व पठित सर्वनामों के अभ्यास के अनन्तर अधोलिखित सर्वनामों के सभी रूपों का ज्ञान एवं प्रयोग आवश्यक है। संस्कृत में प्रयोग होने वाले सर्वनाम शब्द, उसके भेद के अनुसार इस प्रकार है –

| सर्वनाम के प्रकार | | शब्द |
|---|---|---|
| (1) पुरुषवाचक | उत्तम | अस्मद् (मैं) |
| | मध्यम | युष्मद् (तू, तुम) |
| | प्रथम (अन्य) | तद् (वह) |
| (2) निश्चयवाचक | | एतद् (यह) |
| | | इदम् (यह) |
| (3) अनिश्चयवाचक | | सर्व (सब) |
| (4) सम्बन्ध वाचक | | यद् (जो) |
| (5) प्रश्नवाचक | | किम् (क्या, कौन) |

### अस्मद्

इसके रूप सभी लिङ्गों में समान होते हैं।

| विभक्ति | | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|---|
| प्रथमा | (कर्ता) | अहम् | आवाम् | वयम् |
| द्वितीया | (कर्म) | माम्/मा | आवाम्, नौ | अस्मान्, नः |
| तृतीया | (करण) | मया | आवाभ्याम् | अस्माभिः |
| चतुर्थी | (सम्प्रदान) | मह्यम्, मे | आवाभ्याम्, नौ | अस्मभ्यम्, नः |
| पञ्चमी | (अपादान) | मत् | आवाभ्याम् | अस्मत् |
| षष्ठी | (सम्बन्ध) | मम, मे | आवयोः, नौ | अस्माकम्, नः |
| सप्तमी | (अधिकरण) | मयि | आवयोः | अस्मासु |

### युष्मद्

इसके रूप तीनों लिङ्गो में समान होते हैं

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | त्वम् | युवाम् | यूयम् |

| | | | |
|---|---|---|---|
| द्वितीया | त्वाम्, त्वा | युवाम्, वाम् | युष्मान्, वः |
| तृतीया | त्वया | युवाभ्याम् | युष्माभिः |
| चतुर्थी | तुभ्यम्, ते | –,,– | युष्मभ्यम्, वः |
| पञ्चमी | त्वत् | –,,– | युष्मत् |
| षष्ठी | तव, ते | युवयोः, वाम् | युष्माकम्, वः |
| सप्तमी | त्वयि | –,,– | युष्मासु |

### तद् पुल्लिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | सः | तौ | ते |
| द्वितीया | तम् | तौ | तान् |
| तृतीया | तेन् | ताभ्याम् | तैः |
| चतुर्थी | तस्मै | ,, | तेभ्यः |
| पञ्चमी | तस्मात् | ,, | ,, |
| षष्ठी | तस्य | तयोः | तेषाम् |
| सप्तमी | तस्मिन् | ,, | तेषु |

### तद् स्त्रीलिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | सा | ते | ताः |
| द्वितीया | ताम् | –,,– | –,,– |
| तृतीया | तया | ताभ्याम् | ताभिः |
| चतुर्थी | तस्यै | –,,– | ताभ्यः |
| पञ्चमी | तस्याः | –,,– | ताभ्यः |
| षष्ठी | –,,– | तयोः | तासाम् |
| सप्तमी | तस्याम् | –,,– | तासु |

### तद् नपुंसकलिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | तत् | ते | तानि |
| द्वितीया | तत् | ते | तानि |

शेष रूप पुल्लिङ्गवत्।

### एतद् पुल्लिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | एषः | एतौ | एते |
| द्वितीया | एतम्, एनम् | एतौ, एनौ | एतान्, एनान् |
| तृतीया | एतेन, एनेन | एताभ्याम् | एतैः |

| | | | |
|---|---|---|---|
| चतुर्थी | एतस्मै | –,,– | एतेभ्यः |
| पञ्चमी | एतस्मात् | –,,– | –,,– |
| षष्ठी | एतस्य | एतयोः, एनयोः | एतेषाम् |
| सप्तमी | एतस्मिन् | –,,– –,,– | एतेषु |

### एतद् स्त्रीलिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | एषा | एते | एताः |
| द्वितीया | एताम् , एनाम् | एते, एने | एताः, एनाः |
| तृतीया | एतया , एनया | एताभ्याम् | एताभिः |
| चतुर्थी | एतस्यै | –,,– | एताभ्यः |
| पञ्चमी | एतस्याः | –,,– | –,,– |
| षष्ठी | –,,– | एतयोः , एनयोः | एतासाम् |
| सप्तमी | एतस्याम् | –,,– –,,– | एतासु |

### एतद् नपुंसकलिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | एतत् | एते | एतानि |
| द्वितीया | एतत्, एनत् | एते, एने | एतानि, एनानि |

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

### इदम् पुल्लिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | अयम् | इमौ | इमे |
| द्वितीया | इमम्, एनम् | इमौ, एनौ | इमान्, एनान् |
| तृतीया | अनेन, एनेन | आभ्याम् | एभिः |
| चतुर्थी | अस्मै | –,,– | एभ्यः |
| पञ्चमी | अस्मात् | –,,– | –,,– |
| षष्ठी | अस्य | अनयोः, एनयोः | एषाम् |
| सप्तमी | अस्मिन् | –,,– –,,– | एषु |

### इदम् स्त्रीलिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | इयम् | इमे | इमाः |
| द्वितीया | इमाम्, एनाम् | इमे, एने | इमाः, एनाः |
| तृतीया | अनया, एनया | आभ्याम् | आभिः |
| चतुर्थी | अस्यै | –,,– | आभ्यः |
| पञ्चमी | अस्याः | –,,– | –,,– |
| षष्ठी | –,,– | अनयोः, एनयोः | आसाम् |
| सप्तमी | अस्याम् | –,,– –,,– | आसु |

### इदम् नपुंसकलिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | इदम् | इमे | इमानि |
| द्वितीया | इदम्, एनात् | इमे, एने | इमानि, एनानि |

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

### सर्व–पुल्लिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | सर्वः | सर्वौ | सर्वे |
| द्वितीया | सर्वम् | –,,– | सर्वान् |
| तृतीया | सर्वेण | सर्वाभ्याम् | सर्वैः |
| चतुर्थी | सर्वस्मै | –,,– | सर्वेभ्यः |
| पञ्चमी | सर्वस्मात् | –,,– | –,,– |
| षष्ठी | सर्वस्य | सर्वयोः | सर्वेषाम् |
| सप्तमी | सर्वस्मिन् | –,,– | सर्वेषु |

### सर्व–स्त्रीलिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | सर्वा | सर्वे | सर्वाः |
| द्वितीया | सर्वाम् | सर्वे | सर्वाः |
| तृतीया | सर्वया | सर्वाभ्याम् | सर्वाभिः |
| चतुर्थी | सर्वस्यै | –,,– | सर्वाभ्यः |
| पञ्चमी | सर्वस्याः | –,,– | –,,– |
| षष्ठी | –,,– | सर्वयोः | सर्वासाम् |
| सप्तमी | सर्वस्याम् | –,,– | सर्वासु |

### सर्व–नपुंसकलिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | सर्वम् | सर्वे | सर्वाणि |
| द्वितीया | सर्वम् | सर्वे | सर्वाणि |

तृतीया से लेकर सप्तमी तक के रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

### किम्–पुल्लिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | कः | कौ | के |
| द्वितीया | कम् | कौ | कान् |
| तृतीया | केन | काभ्याम् | कैः |

| | | | |
|---|---|---|---|
| चतुर्थी | कस्मै | –,,– | केभ्यः |
| पञ्चमी | कस्मात् | –,,– | –,,– |
| षष्ठी | कस्य | कयोः | केषाम् |
| सप्तमी | कस्मिन् | –,,– | केषु |

### किम्–स्त्रीलिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | का | के | काः |
| द्वितीया | काम् | के | काः |
| तृतीया | कया | काभ्याम् | काभिः |
| चतुर्थी | कस्यै | काभ्याम् | काभ्यः |
| पञ्चमी | कस्याः | काभ्याम् | काभ्यः |
| षष्ठी | कस्याः | कयोः | कासाम् |
| सप्तमी | कस्याम् | कयोः | कासु |

### किम्–नपुंसकलिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | किम् | के | कानि |
| द्वितीया | किम् | के | कानि |

शेष रूप पुल्लिङ्गवत् होंगे।

**अभ्यास :–** विभक्ति चिह्नों के अनुसार शिक्षक, छात्रों से परस्पर कक्षा में वाक्यों का अभ्यास करायेंगे।

**यथा :–** कः पाठं अपठत् ? किसने पाठ को पढ़ा ? बालकः पाठम् अपठत्। बालक ने पाठ को पढ़ा। यहां प्रथमा विभक्ति (चिह्न ने) का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार अन्य विभक्ति चिह्नों का प्रयोग पु०, स्त्री० एवं नपुंसकलिङ्ग के रूप के अनुसार कक्षा में किया जावे।

**(1) अस्मद्, युष्मद् और तद् शब्दों के रूप लिखकर कण्ठस्थ कीजिये।**

**(2) यद् शब्द का द्वितीया से पञ्चमी तक तीनों लिङ्गो में रूप लिखिये।**

## विशेषण

**परिभाषा :–** वह शब्द जो किसी संज्ञा एवं सर्वनाम की विशेषता बताता है, विशेषण कहलाता है।

**यथा :–** कृष्णः अजः (काला बकरा)

उपर्युक्त उदाहरण में 'कृष्णः' अजः शब्द की विशेषता बताता है।

विशेषण शब्द के लिङ्ग, वचन, पुरुष एवं कारक विशेष्य (संज्ञा) शब्द के लिङ्ग, वचन, पुरुष तथा कारक के अनुसार होते हैं।

विशेषण के अन्तर्गत संख्यावाची शब्द भी विशेषण होते हैं। पूर्व पठित संख्यावाची शब्दों के अभ्यास के अतिरिक्त 21 से 50 तक संख्याओं के नामिक परिचय निम्न प्रकार से कराया जावे।

## संख्यावाची शब्द

### 21 से 50 तक (नामिक परिचय)

| हिन्दी अंक | क्रम संख्या (पुल्लिङ्ग में) | क्रम संख्या (नपुंसकलिङ्ग में) | क्रम संख्या (स्त्रीलिङ्ग में) |
|---|---|---|---|
| 21 | एकविंशतितमः | एकविंशतितमम् | एकविंशतितमा |
| 22 | द्वाविंशतितमः | द्वाविंशतितमम् | द्वाविंशतितमा |
| 23 | त्रयोविंशतितमः | त्रयोविंशतितमम् | त्रयोविंशतितमा |
| 24 | चतुर्विंशतितमः | चतुर्विंशतितमम् | चतुर्विंशतितमा |
| 25 | पञ्चविंशतितमः | पञ्चविंशतितमम् | पञ्चविंशतितमा |
| 26 | षड्विंशतितमः | षड्विंशतितमम् | षडविंशतितमा |
| 27 | सप्तविंशतितमः | सप्तविंशतितमम् | सप्तविंशतितमा |
| 28 | अष्टविंशतितमः | अष्ठविंशतितमम् | अष्टविंशतितमा |
| 29 | नवविंशतितमः | नवविंशतितमम् | नवविंशतितमा |
| 30 | त्रिंशत्तमः | त्रिंशत्तमम् | त्रिंशतित्तमा |
| 31 | एकत्रिंशत्तमः | एकत्रिंशत्तमम् | एकत्रिंशत्तमा |
| 32 | द्वात्रिंशत्तमः | द्वात्रिंशत्तमम् | द्वात्रिंशत्तमा |
| 33 | त्रयस्त्रिंशत्तमः | त्रयस्त्रिंशत्तमम् | त्रयस्त्रिंशत्तमा |
| 34 | चतुस्त्रिंशत्तमः | चतुस्त्रिंशत्तमम् | चतुस्त्रिंशत्तमा |
| 35 | पञ्चत्रिंशत्तमः | पञ्चत्रिंशत्तमम् | पञ्चत्रिंशत्तमा |
| 36 | षट्त्रिंशत्तमः | षट्त्रिंशत्तमम् | षट्त्रिंशत्तमा |
| 37 | सप्तत्रिंशत्तमः | सप्तत्रिंशत्तमम् | सप्तत्रिंशत्तमा |
| 38 | अष्टत्रिंशत्तमः | अष्टत्रिंशत्तमम् | अष्टत्रिंशत्तमा |
| 39 | नवत्रिंशत्तमः | नवत्रिंशत्तमम् | नवत्रिंशत्तमा |
| 40 | चत्वारिंशत्तमः | चत्वारिंशत्तमम् | चत्वारिंशत्तमा |
| 41 | एकचत्वारिंशत्तमः | एकचत्वारिंशत्तमम् | एकचत्वारिंशत्तमा |
| 42 | द्वाचत्वारिंशत्तमः | द्वाचत्वारिंशत्तमम् | द्वाचत्वारिंशत्तमा |
| 43 | त्रयश्चत्वारिंशत्तमः | त्रयश्चत्वारिंशत्तमम् | त्रयश्चत्वारिंशत्तमा |
| 44 | चतुश्चत्वारिंशत्तमः | चतुश्चत्वारिंशत्तमम् | चतुश्चत्वारिंशत्तमा |
| 45 | पञ्चचत्वारिंशत्तमः | पञ्चचत्वारिंशत्तमम् | पञ्चचत्वारिंशत्तमा |
| 46 | षट्चत्वारिंशत्तमः | षट्चत्वारिंशत्तमम् | षट्चत्वारिंशत्तमा |
| 47 | सप्तचत्वारिंशत्तमः | सप्तचत्वारिंशत्तमम् | सप्तचत्वारिंशत्तमा |
| 48 | अष्टचत्वारिंशत्तमः | अष्टचत्वारिंशत्तमम् | अष्टचत्वारिंशत्तमा |
| 49 | नवचत्वारिंशत्तमः | नवचत्वारिंशत्तमम् | नवचत्वारिंशत्तमा |
| 50 | पञ्चाशत्तमः | पञ्चाशत्तमम् | पञ्चाशत्तमा |

### (अ) एक

| विभक्ति | पुल्लिङ्ग | स्त्रीलिङ्ग | नपुंसकलिङ्ग |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | एकः | एका | एकम् |
| द्वितीया | एकम् | एकाम् | एकम् |
| तृतीया | एकेन | एकया | एकेन |
| चतुर्थी | एकस्मै | एकस्यै | एकस्मै |
| पञ्चमी | एकस्मात् | एकस्याः | एकस्मात् |
| षष्ठी | एकस्य | एकस्याः | एकस्य |
| सप्तमी | एकस्मिन् | एकस्याम् | एकस्मिन् |

'एक' शब्द संख्यावाची होने से 'एकवचन' होता है। अतः इसके कारक रूप एकवचन में ही होते हैं। तीनों लिङ्गो में इस शब्द का रूप 'सर्व' के समान होते हैं। पूरे रूप ऊपर वर्णित है।

### (ब) द्वि (दो)

यह शब्द नित्य द्विवचनान्त है। इसके रूप अधोलिखित है।

| विभक्ति | पुल्लिङ्ग | स्त्रीलिङ्ग | नपुंसकलिङ्ग |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | द्वौ | द्वे | द्वे |
| द्वितीया | ,, | ,, | ,, |
| तृतीया | द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम |
| चतुर्थी | ,, | ,, | ,, |
| पञ्चमी | ,, | ,, | ,, |
| षष्ठी | द्वयोः | द्वयोः | द्वयोः |
| सप्तमी | ,, | ,, | ,, |

**टीप :–** तृतीया से सप्तमी तक के रूप तीनों लिङ्गो में समान हैं।

### (स) त्रि (तीन)

यह नित्य बहुवचनान्त है। इसके रूप इस प्रकार है–

| विभक्ति | पुल्लिङ्ग | स्त्रीलिङ्ग | नपुंसकलिङ्ग |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | त्रयः | तिस्रः | त्रीणि |
| द्वितीया | त्रीन् | ,, | ,, |
| तृतीया | त्रिभिः | तिसृभिः | पुल्लिङ्ग वत् |
| चतुर्थी | त्रिभ्यः | तिसृभ्यः | ,, |
| पञ्चमी | ,, | ,, | ,, |
| षष्ठी | त्रयाणाम् | तिसृणाम् | ,, |
| सप्तमी | त्रिषु | तिसृषु | ,, |

नपुंसकलिङ्ग में तृतीया से सप्तमी तक पुल्लिङ्ग के समान रूप होते हैं।

## अभ्यासप्रश्नाः

**(1) 29,39,49 संख्याओं को संस्कृत में लिखिए।**

**(2) एकम्, द्वि एवं त्रि शब्दों के तीनों लिङ्गो में रूप लिखिए।**

## लकार (काल)

हिन्दी में जिससे किसी कार्य के होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं और संस्कृत में क्रिया के मूल रूप को ही धातु कहते हैं। इन धातुओं को दस समूहों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक समूह को गण कहा जाता है। प्रत्येक गण तीन पदों में विभक्त हैं जिसे क्रमशः परस्मैपद, आत्मनेपद एवं उभयपद कहते हैं। इन पदों से युक्त धातुओं के रूप विभिन्न कालों के अनुसार होते हैं। इस काल को संस्कृत में 'लकार' की संज्ञा दी गई है। ये लकार दस होते हैं।

इन लकारों के स्थान में जो तिङ् –प्रत्यय होते हैं उनमें (लकार विशेष के कारण) विशेषता आ जाती है। मुख्य रूप से इन प्रत्ययों को दो वर्गों में बांटा जा सकता है।

(1) प्रथम वर्ग – भ्वादि, दिवादि, तुदादि एवं चुरादि गण।

(2) द्वितीय वर्ग – अदादि, जुहोत्यादि, स्वादि, रुधादि, तनादि और क्रयादि गण।

### प्रथम वर्ग का प्रत्यय

| लकार | काल अर्थ | पुरुष | परस्मैपदी प्रत्यय | | | आत्मनेपदी प्रत्यय | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
| 1. लट् | वर्तमान | अ०पु० | अति | अतः | अन्ति | अते | एते | अन्ते |
| | | म०पु० | असि | अथः | अथ | असे | एथे | अध्वे |
| | | उ०पु० | आमि | आवः | आमः | ए | आवहे | आमहे |
| 2. लङ् | अनद्यतन भूत | अ०पु० | अत् | अताम् | अन् | अत | एताम् | अन्त |
| | | म०पु० | अः | अतम् | अत | अथाः | एथाम् | अध्वम् |
| | | उ०पु० | अम् | आव | आम | ए | आवहि | आमहि |
| 3. लोट् | आज्ञार्थ | अ०पु० | अतु | अताम् | अन्तु | अताम् | एताम् | अन्ताम् |
| | | म०पु० | अ | अतम् | अत | अस्व | एथाम् | अध्वम् |
| | | उ०पु० | आनि | आव | आम | ऐ | आवहै | आमहै |
| 4. विधिलिङ् | | अ०पु० | एत् | एताम् | एयुः | एत | एयाताम् | एरन् |
| | | म०पु० | एः | एतम् | एत | एथाः | एयाथाम् | एध्वम् |
| | | उ०पु० | एयम् | एव | एम | एय | एवहि | एमहि |
| 5. लृट् | भविष्यत् | अ०पु० | इष्यति | इष्यतः | इष्यन्ति | इष्यते | इष्येते | इष्यन्ते |
| | | म०पु० | इष्यसि | इष्यथः | इष्यथ | इष्यसे | इष्येथे | इष्यध्वे |
| | | उ०पु० | इष्यामि | इष्यावः | इष्यामः | इष्ये | इष्यावहे | इष्यामहे |

**लृट्लकार के तिङ्** – प्रत्यय लट् की तरह होते हैं। यह ज्ञातव्य हो कि 'स्य' (लृट् का विकरण) के साथ जोड़कर स्पष्ट करने के लिए उन्हें दिखाया गया है।

अब कक्षा में पढाये जाने वाले इन प्रमुख लकारों के अतिरिक्त पांच लकार और है। संस्कृत भाषा में उनके प्रयोग बहुत होते हैं पर इस कक्षा के पाठ्यक्रम में उनका निर्धारण नहीं है। अतः उन लकारों के नामों की ही जानकारी दी जा रही है :–

| | लकार | काल अर्थ |
|---|---|---|
| 6. | लिट् | परोक्षभूत |
| 7. | लुट् | अनद्यतन भविष्यत् |
| 8. | लुङ् | सामान्य भूत |
| 9. | लृङ् | हेतुहेतुमद्भाव |
| 10. | लेट् | केवल वेद में प्रयुक्त होता है। |

## धातु रुप

कक्षा 6वीं में लट् लकार, लङ्लकार एवं लृट् लकार में परस्मैपद के धातु प्रत्यय और रूपों का समुचित अभ्यास तथा कक्षा 7वीं में लोट् लकार और विधिलिङ् में परस्मैपद और आत्मनेपद प्रत्यय एवं धातु रूपों का ज्ञान कराया गया है।

अब कक्षा 8वीं में प्रथम पांच लकारों में छात्रों के अध्ययनार्थ धातु रूपों का उल्लेख इस प्रकार किया गया है–

### लट् लकार (वर्तमान काल)

भ्वादि (प्रथम गण)–विकरण चिन्ह 'अ'

| | परस्मैपद | | | आत्मनेपद | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | नम् (प्रणाम करना) | | | लभ् (प्राप्त करना) | | |
| पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
| अन्य | नमति | नमतः | नमन्ति | लभते | लभेते | लभन्ते |
| मध्यम | नमसि | नमथः | नमथ | लभसे | लभेथे | लभध्वे |
| उत्तम | नमामि | नमावः | नमामः | लभे | लभावहे | लभामहे |

दिवादि (चतुर्थ) गण–विकरण चिन्ह 'य'

| | नश् (नष्ट होना) | | | युध् (लड़ाई करना) | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
| अन्य | नश्यति | नश्यतः | नश्यन्ति | युध्यते | युध्येते | युध्यन्ते |
| मध्यम | नश्यसि | नश्यथः | नश्यथ | युध्यसे | युध्येथे | युध्यध्वे |
| उत्तम | नश्यामि | नश्यावः | नश्यामः | युध्ये | युध्यावहे | युध्यामहे |

तुदादि (षष्ठ) गण–विकरण चिन्ह 'अ'

| | लिख् (लिखना) | | | मृ (मरना) | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
| अन्य | लिखति | लिखतः | लिखन्ति | म्रियते | म्रियेते | म्रियन्ते |
| मध्यम | लिखसि | लिखथः | लिखथ | म्रियसे | म्रियेथे | म्रियध्वे |
| उत्तम | लिखामि | लिखावः | लिखामः | म्रिये | म्रियावहे | म्रियामहे |

## चुरादि (दशम्) गण–विकरण चिन्ह 'अय'

चुर् (चोरी करना) — कथ् (कहना)

| पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अ०पु० | चोरयति | चोरयतः | चोरयन्ति | कथयते | कथयेते | कथयन्ते |
| म०पु० | चोरयसि | चोरयथः | चोरयथ | कथयसे | कथयेथे | कथयध्वे |
| उ०पु० | चोरयामि | चोरयावः | चोरयामः | कथये | कथयावहे | कथयामहे |

## लङ् लकार (अनद्यतन् भूतकाल)

परस्मैपद — आत्मनेपद

भ्वादिगण–नम् — भ्वादिगण–लभ्

| पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अ०पु० | अनमत् | अनमताम् | अनमन् | अलभत | अलभेताम् | अलभन्त |
| म०पु० | अनमः | अनमतम् | अनमत | अलभथाः | अलभेथाम् | अलभध्वम् |
| उ०पु० | अनमम् | अनमाव | अनमाम | अलभे | अलभावहि | अलभामहि |

दिवादिगण–नश् — दिवादिगण युध्

| पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अ०पु० | अनश्यत् | अनश्यताम् | अनश्यन् | अयुध्यत | अयुध्येताम् | अयुध्यन्त |
| म०पु० | अनश्यः | अनश्यतम् | अनश्यत | अयुध्यथाः | अयुध्येथाम् | अयुध्यध्वम् |
| उ०पु० | अनश्यम् | अनश्याव | अनश्याम | अयुध्ये | अयुध्यावहि | अयुध्यामहि |

तुदादिगण लिख् — तुदादिगण मृ

| पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अ०पु० | अलिखत् | अलिखताम् | अलिखन् | अम्रियत | अम्रियेताम् | अम्रियन्त |
| म०पु० | अलिखः | अलिखतम् | अलिखत | अम्रियथाः | अम्रियेथाम् | अम्रियध्वम् |
| उ०पु० | अलिखम् | अलिखाव | अलिखाम | अम्रिये | अम्रियावहि | अम्रियामहि |

चुरादिगण चुर् — चुरादिगण कथ्

| पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अ०पु० | अचोरयत् | अचोरयताम् | अचोरयन् | अकथयत | अकथयेताम् | अकथयन्त |
| म०पु० | अचोरयः | अचोरयतम् | अचोरयत | अकथयथाः | अकथयेथाम् | अकथयध्वम् |
| उ०पु० | अचोरयम् | अचोरयाव | अचोरयाम | अकथये | अकथयावहि | अकथयामहि |

## लोट् लकार (आज्ञार्थ काल)

भ्वादिगण–नम् — भ्वादिगण–लभ्

| पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अ०पु० | नमतु | नमताम् | नमन्तु | लभताम् | लभेताम् | लभन्ताम् |
| म०पु० | नम | नमतम् | नमत | लभस्व | लभेथाम् | लभध्वम् |
| उ०पु० | नमानि | नमाव | नमाम | लभै | लभावहै | लभामहे |

दिवादिगण नश् — दिवादिगण यूध्

| पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अ०पु० | नश्यतु | नश्यताम् | नश्यन्तु | युध्यताम् | युध्येताम् | युध्यन्ताम् |
| म०पु० | नश्य | नश्यतम् | नश्यत | युध्यस्व | युध्येथाम् | युध्यध्वम् |
| उ०पु० | नश्यानि | नश्याव | नश्याम | युध्यै | युध्यावहै | युध्यामहै |
| | | तुदादिगण लिख् | | | तुदादिगण मृ | |
| **पुरुष** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** |
| अ०पु० | लिखतु | लिखताम् | लिखन्तु | म्रियताम् | म्रियेताम् | म्रियन्ताम् |
| म०पु० | लिख | लिखतम् | लिखत | म्रियस्व | म्रियेथाम् | म्रियध्वम् |
| उ०पु० | लिखानि | लिखाव | लिखाम | म्रियै | म्रियावहै | म्रियामहै |
| | | चुरादिगण–चुर् | | | चुरादिगण–कथ् | |
| **पुरुष** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** |
| अ०पु० | चोरयतु | चोरयताम् | चोरयन्तु | कथयताम् | कथयेताम् | कथयन्ताम् |
| म०पु० | चोरय | चोरयतम् | चोरयत | कथयस्व | कथयेथाम् | कथयध्वम् |
| उ०पु० | चोरयानि | चोरयाव | चोरयाम | कथयै | कथयावहै | कथयामहै |

## विधिलिङ् लकार

| | | परस्मैपद | | | आत्मनेपद | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | भ्वादिगण नम् | | | भ्वादिगण–लभ् | |
| **पुरुष** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** |
| अ०पु० | नमेत् | नमेताम् | नमेयुः | लभेत | लभेयाताम् | लभेरन् |
| म०पु० | नमेः | नमेतम् | नमेत | लभेथाः | लभेयाथाम् | लभेध्वम् |
| उ०पु० | नमेयम् | नमेव | नमेम | लभेय | लभेवहि | लभेमहि |
| | | दिवादिगण–नश् | | | दिवादिगण युध् | |
| **पुरुष** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** |
| अ०पु० | नश्येत् | नश्येताम् | नश्येयुः | युध्येत | युध्येयाताम् | युध्येरन् |
| म०पु० | नश्येः | नश्येतम् | नश्येत | युध्येथाः | युध्येयाथाम् | युध्येध्वम् |
| उ०पु० | नश्येयम् | नश्येव | नश्येम | युध्येय | युध्येवहि | युध्येमहि |
| | | तुदादिगण–लिख् | | | युदादिगण–म्रि | |
| **पुरुष** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** |
| अ०पु० | लिखेत् | लिखेताम् | लिखेयुः | म्रियेत | म्रियेयाताम् | म्रियेरन् |
| म०पु० | लिखेः | लिखेतम् | लिखेत | म्रियेथाः | म्रियेयाथाम् | म्रियेध्वम् |
| उ०पु० | लिखेयम् | लिखेव | लिखेम | म्रियेय | म्रियेवहि | म्रियेमहि |
| | | चुरादिगण–चूर् | | | चुरादिगण–कथ् | |
| **पुरुष** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** |
| अ०पु० | चोरयेत् | चोरयेताम् | चोरयेयुः | कथयेत | कथयेयाताम् | कथयेरन् |
| म०पु० | चोरयेः | चोरयेतम् | चोरयेत | कथयेथाः | कथयेयाथाम् | कथयेध्वम् |
| उ०पु० | चोरयेयम् | चोरयेव | चोरयेम | कथयेय | कथयेवहि | कथयेमहि |

## लृट् लकार (भविष्यत् काल)

| | | भ्वादिगण–नम् | | | भ्वादिगण–लभ् | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| **पुरुष** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** |
| अ०पु० | नमिष्यति | नमिष्यतः | नमिष्यन्ति | लप्स्यते | लप्स्येते | लप्स्यन्ते |
| म०पु० | नमिष्यसि | नमिष्यथः | नमिष्यथ | लप्स्यसे | लप्स्येथे | लप्स्यध्वे |
| उ०पु० | नमिष्यामि | नमिष्यावः | नमिष्यामः | लप्स्ये | लप्स्यावहे | लप्स्यामहे |
| | | दिवादिगण–नश् | | | दिवादिगण–युध् | |
| **पुरुष** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** |
| अ०पु० | नशिष्यति | नशिष्यतः | नशिष्यन्ति | युध्यस्यते | युध्यस्येते | युध्यस्यन्ते |
| म०पु० | नशिष्यसि | नशिष्यथः | नशिष्यथ | युध्यस्यसे | युध्यस्येथे | युध्यस्यध्वे |
| उ०पु० | नशिष्यामि | नशिष्यावः | नशिष्यामः | युध्यस्ये | युध्यस्यावहे | युध्यस्यामहे |
| | | तुदादिगण–लिख् | | | तुदादिगण–मृ | |
| **पुरुष** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** |
| अ०पु० | लेखिष्यति | लेखिष्यतः | लेखिष्यन्ति | म्रियस्यते | म्रियस्येते | म्रियस्यन्ते |
| म०पु० | लेखिष्यसि | लेखिष्यथः | लेखिष्यथ | म्रियस्यसे | म्रियस्येथे | म्रियस्यध्वे |
| उ०पु० | लेखिष्यामि | लेखिष्यामः | लेखिष्यामः | म्रियस्ये | म्रियस्यावहे | म्रियस्यामहे |
| | | चुरादिगण–चुर् | | | चुरादिगण–कथ् | |
| **पुरुष** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** |
| अ०पु० | चोरयिष्यति | चोरयिष्यतः | चोरयिष्यन्ति | कथयिष्यते | कथयिष्येते | कथयिष्यन्ते |
| म०पु० | चोरयिष्यसि | चोरयिष्यथः | चोरयिष्यथ | कथयिष्यसे | कथयिष्येथे | कथयिष्यध्वे |
| उ०पु० | चोरयिष्यामि | चोरयिष्यावः | चोरयिष्यामः | कथयिष्ये | कथयिष्यावहे | कथयिष्यामहे |

## कारक

**परिभाषा** :– क्रिया के साथ जिसका सम्बन्ध हो उसे कारक कहते हैं।

**यथा** :– बालकः पुस्तकं पठति।
यहां पठति (पढ़ता है) क्रिया है। उसके साथ बालक और पुस्तक का सीधा सम्बन्ध है।

**प्रकार** :– संस्कृत में कारक छः माने जाते हैं :–
(1) कर्त्ता (2) कर्म (3) करण (4) सम्प्रदान (5) अपादान (6) अधिकरण।

**विशेष** :– सम्बन्ध को कारक नहीं माना गया है। यह विभक्ति के रूप में प्रयोग होता है।

**विभक्ति** :– वाक्य में क्रिया के साथ कारक का सम्बन्ध बतलाने के लिये शब्दों के साथ विभक्तियाँ लगायी जाती है। क्रिया का सम्बन्ध विभक्ति चिह्नों द्वारा ही प्रकट किया जाता है।

**प्रकार** :– विभक्तियाँ सात हैं।
प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी

## सुप्–प्रत्यय–विवरण

| विभक्ति | कारक | चिन्ह | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रथमा | कर्ता | ने | सु ((स्) | औ | जस् (अस्) |
| द्वितीया | कर्म | को | अम् | और (औ) | शस् (अस्) |
| तृतीया | करण | से, के द्वारा | टा (आ) | भ्याम् | भिस् (भिः) |
| चतुर्थी | सम्प्रदान | को, के लिए | ङे (ए) | भ्याम् | भ्यस् (भ्यः) |
| पञ्चमी | अपादान | से | ङसि (इ) | भ्याम् | भ्यस् (भ्यः) |
| षष्ठी | सम्बन्ध | का, के,की | ङस् (अस्) | ओस् (ओः) | आम् |
| सप्तमी | अधिकरण | मे, पर | ङि (इ) | ओस् (ओः) | सुप (सु) |
| सम्बोधन | सम्बोधन | हे, अरे | | | |

## प्रयोग एवं नियम

### (1) कर्ता कारक, प्रथमा विभक्ति :–

1. कर्तृवाच्य के कर्ता कारक में प्रथमा विभक्ति होती है।
   **यथा** :– छात्रः कथां कथयति।
2. कर्म वाच्य के कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है ।
   **यथा** :– ग्रन्थः पठ्यते।
3. सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है।
   **यथा** :– हे मित्र! त्वं कुत्र गच्छसि ?
4. इति शब्द के योग में प्रथमा विभक्ति होती है।
   **यथा** :– जनाः इमं रामः इति कथयन्ति।

### (2) द्वितीया विभक्ति–कर्म कारक

1. कर्तृवाच्य के कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।
   **यथा** :– सः फलं खादति। कविः कवितां लिखति।
2. समय वाचक और मार्गवाचक शब्दों में निरन्तरता का अर्थ बताने के लिये द्वितीया विभक्ति होती है।
   **यथा** :– योजनं पर्वतः। (एक योजन तक पर्वत है।)
   मासं पठति (लगातार महीने भर से पढ़ता है।)
3. शीङ् (सोना), स्था (ठहरना), तथा आस् (बैठना), धातु के पूर्व अधि उपसर्ग, विश् (घुसना) धातु के पूर्व अभि, 'नि', और वस् (रहना) धातु के पूर्व 'उप' 'अनु' 'अधि', 'आङ्' में से किसी उपसर्ग के लगने पर क्रिया का आधार कर्म बनता है और उसमें द्वितीया विभक्ति होती है।
   **यथा** :–
   (1) मोहनः शय्याम् अधिशेते।
   (2) श्यामः शय्याम् अधि तिष्ठति
   (3) राजा सिंहासनम् अध्यासते।
   (4) सः सन्मार्गम् अभि निविशते।
   (5) हरिः बैकुण्ठं उपवसति, अनुवसति, अधिवसति, आवसति वा।

4. अन्तरा (बीच में), अन्तरेण (के बिना, छोड़कर), अभितः (चारों ओर), परितः (सब ओर), समया (समीप), निकषा (समीप, निकट) हा (हाय), प्रति (ओर, तरफ), उभयतः (दोनों ओर), सर्वतः (सब ओर), धिक् (धिक्कार), उपर्युपरि (सबसे ऊपर), अधोऽधः (सबसे नीचे), अध्यधि (समीप देश में), ऋते बिना इत्यादि अव्ययों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

**यथा** :–(1) गङ्गां यमुनां चान्तरा प्रयागः।
(2) परिश्रमम् अन्तरेण कुतो विद्या।
(3) नृपम् अभितः परिजनाः ।
(4) नगरं परितः जलम्।
(5) ग्रामं समया निकषा वा उद्यानम् वर्तते।
(6) दीनं प्रति दया करणीयम्।
(7) उभयतः नदीं ग्रामः।
(8) सर्वतः शिक्षकं छात्राः।
(9) धिक् कृपणम्।
(10) ऋते ज्ञानं सुखं नैव।

**(3) तृतीया विभक्ति–करणकारक**

अधोलिखित में तृतीया विभक्ति होती है।

**(1) करण कारक में –**

**यथा** – रामः रावणं वाणेन हतवान्।

**(2) कर्म एवं भाव वाच्य के कर्ता में –**

**यथा** – (1) मया पुस्तकं पठ्यते। (कर्मवाच्य)
(2) तेन हसितम् (भाववाच्य)

**(3) जिस विकृत अंग में विकार हो, उसके वाचक शब्द में –**

**यथा**– (1) पादेन खञ्जः।
(2) अक्ष्णा काणः।
(3) कर्णाभ्यां वधिरः।

**(4) कारण (हेतु) वाचक शब्दों में –**

(1) परिश्रमेण धनम्।

**(5) फल प्राप्ति (या कार्य–पूर्णता) के अर्थ में काल एवं मार्ग वाची शब्दों में–**

(1) सप्तभिः दिनैः नीरोगः जातः।
(2) क्रोशेन पुस्तकं पठितवान्।

**(6) साथ अर्थ वाले सह, साकं, सार्धं, समं आदि अव्यय शब्दों के योग में –**

**यथा** – (1) सः मित्रेण सह गच्छति।
(2) सीताया साकं रामः वनं गतः।
(3) फलैः समं दुग्धं पिब।

**(7) पृथक्, बिना, नाना–शब्दों के योग में द्वितीया, तृतीया अथवा पञ्चमी में से कोई भी विभक्ति होती है।**

**यथा** :– (1) जलं (जलेन, जलात् वा) बिना कोऽपि न जीवति।
(2) पृथक् रामं (रामेण, रामात् वा) न कोऽपि रक्षकः।
(3) धनं (धनेन, धनात् वा) नाना न सुखम्।

**(4) चतुर्थी विभक्ति– सम्प्रदान कारक–**

(1) सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है–

**यथा** :– गुरुः शिष्याय ज्ञानं ददाति।

(2) दा (देना), रुच् (अच्छा लगना), स्पृह् (इच्छा करना) धारि–धारयति (धारण करना) के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

**यथा** :– (1) धनिकः विप्राय धनं यच्छति।
(2) गणेशाय मोदकाः रोचन्ते।
(3) पुष्पेभ्यः स्पृह्यति।
(4) मोहनः देवदत्ताय शतं धारयति।

(3) नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् और वषट् के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

**यथा** :–(1) गुरवे नमः)। (2) प्रजाभ्यः स्वस्ति। (3) अग्नये स्वाहा। (4) पितृभ्यःस्वधा। (5) दैत्येभ्यो हरिः अलम्। (6) इन्द्राय वषट्।

(4) क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य् तथा असूय् धातुओं के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।
(1) प्रभुः सेवकाय क्रुध्यति।
(2) खलः सज्जनेभ्यः असूयति, द्रुहयति, ईर्ष्यति वा।

**(5) पञ्चमी विभक्ति– अपादान कारक–**

1. अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है।
वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
2. भय एवं रक्षा अर्थ वाली (भी एवं त्रा) धातुओं के योग में–
(1) सः पापाद् विभेति।
(2) धनिकः चौरात् त्रायते।
3. जिससे नियम पूर्वक विद्या ग्रहण की जाय –
छात्रः अध्यापकात् संस्कृतं पठति।
4. जहां से कोई वस्तु उत्पन्न होती है –
गङ्गा हिमालयात् प्रभवति।
5. अन्य, इतर (दूसरा), आरात् (दूर या समीप), ऋते (बिना), और 'पूर्व' शब्दों के योग में –
(1) कृष्णाद् अन्यः।
(2) आरात् ग्रामात्।
(3) ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।
(4) ग्रीष्मात् पूर्वः वसन्तः।

6. प्रभृति, आरभ्य, बहिः, अनन्तरम्, ऊर्ध्वम्, परम आदि शब्द के योग में –
   (1) तस्मात् दिनात् प्रभृति।
   (2) बालकः नगरात् बहिः अगच्छत्।

### (6) षष्ठी विभक्ति– सम्बन्ध कारक

1. सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है।

**यथा** :– (1) राज्ञः पुरुषः।
(2) पितुः पुत्रः ।

2. जब किसी समूह में से गुण क्रिया आदि के आधार पर किसी एक को अलग किया जाय तब समूह में षष्ठी या सप्तमी होती है।
   कवीनां (कविषु वा) कालीदासः श्रेष्ठः।
3. उपरि, पश्चात्, अधस्तात्, अधः, पुरस्तात्, पुरः आदि शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है।
   (1) भवनस्य उपरि।
   (2) मम पश्चात् आगच्छ।
   (3) वृक्षस्य अधः (अधस्तात् वा) एकः पथिकः आसीत्।
   (4) विद्यालयस्य पुरः (पुरस्तात् वा)।

### (7) सप्तमी विभक्ति– अधिकरण कारक

1. अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है।
   वृक्षे पत्राणि सन्ति।
2. जब एक क्रिया के होने पर दूसरी क्रिया का होना पाया जाय तो पहले होने वाली क्रिया में तथा उस क्रिया के कर्ता में भी सप्तमी विभक्ति होते हैं।
   सूर्ये अस्तं गते सर्वे गृहं गताः।
3. जब अनादर का भाव प्रकट हो तो वहां क्रियार्थक शब्दों में षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है।

**यथा** :– रुदति (रुदतः वा) बालके (बालकस्यवा) पिता कार्यालयं गतः।

## अभ्यासप्रश्नाः

**(1) निम्नलिखित कारकों के विभक्ति एवं उदाहरण लिखिए।**

करण, अपादान, अधिकरण।

**(2) कारक की परिभाषा लिखिए।**

**(3) वाक्य प्रयोग कीजिए।**

सह, नमः, अभितः, ऋते, अधोऽधः,

## कृदन्त

धातु के अन्त में कृत् प्रत्यय लगाने से जो शब्द बनता है उसे कृदन्त कहते हैं। जैसेः–

| धातु | प्रत्यय | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| पठ् | शतृ (अत्) | पठत् | पढता हुआ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| लभ् | शानच् (आन्, मान) | लभमानः | प्राप्त करता हुआ |
| भू | क्त (त) | भूत | हुआ |
| गम् | क्तवतु (तवत्) | गतवत् | गया |
| जि | क्त्वा (त्वा) | जित्वा | जीतकर |
| आ+गम् | ल्यप् (य) | आगम्य | आकर |
| लिख् | तुमुन् (तुम्) | लिखितुम् | लिखने के लिये |

**प्रकार :–** कृदन्त पाँच प्रकार के होते हैं।

(1) वर्तमान कालिक (2) भूतकालिक (3) विध्यर्थक
(4) पूर्वकालिक (5) उत्तर कालिक (हेतु वाचक, निमित्तार्थक वा)

## (1) वर्तमान काल :–

जाता हुआ (जाती हुई), पढ़ता हुआ, (पढ़ती हुई) आदि वर्तमान के अर्थ को प्रगट करने के लिये संस्कृत में शतृ (अत्) और शानच् (आन्) प्रत्ययों का प्रयोग होता है।

**नियम :–**

(1) परस्मैपदी धातुओं में शतृ (अत्) और आत्मनेपदी धातुओं में शानच् (आन्) जोड़ा जाता है।
(2) उभयपदी धातुओं में दोनों प्रत्यय लगते हैं।
(3) शतृ प्रत्ययान्त शब्दों के रूप पुल्लिङ्ग में पठन् पठन्तौ–पठन्तः के समान, नपुंसकलिङ्ग में जगत् के समान और स्त्रीलिङ्ग में नदी के समान होते है।
(4) शानच् प्रत्ययान्त शब्द अकारान्त होते हैं। उनके रूप बालक, फल एवं लता के समान क्रमशः पुल्लिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग एवं स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।
(5) 'आन्' के पहले यदि अकारान्त रूप आए तो 'आन्' के स्थान पर 'मान्' हो जाता है।
(6) 'अत्' के पहले अकारान्त रूप आने पर दोनों 'अ' के स्थान में एक ही 'अ' रह जाता है।

**यथा :–**

| धातु | लट्लकार में प्रत्यय जुड़ने से पूर्व का रुप | शतृ प्रत्यय से निष्पन्न शब्द |
|---|---|---|
| वद् (बोलना) | वद् | वदत् |
| पा (पीना) | पिब् | पिबत् |
| नी (ले जाना) | नय् | नयत् |
| वृध् (बढ़ना) | वर्ध् | वर्धमानः |
| सेव् (सेवा करना) | सेव् | सेवमानः |
| वृत् (होना) | वर्त् | वर्तमानः |

## (2) भूतकालिक

भूतकाल (हुआ, हुए) का अर्थ बताने के लिये भूतकालिक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग होता है। ये प्रत्यय किसी कार्य की समाप्ति का बोध कराते हैं। इस कृदन्त के भी दो प्रत्यय होते हैं। (इन दोनों प्रत्यय को निष्ठा भी कहते हैं।)

(1) क्त (त) प्रत्यय (2) क्तवतु (तवत्) प्रत्यय

**यथा** :– कृ+क्त (त) = कृत (किया हुआ, किये हुए)
कृ+क्तवतु (तवत्) = कृतवत् (किया हुआ, किये हुए)

क्त प्रत्ययान्त शब्दों के रूप पुल्लिङ्ग में बालक के समान, नपुंसकलिङ्ग में फल के समान और स्त्रीलिङ्ग में बालिका के समान होते हैं।

क्तवतु प्रत्ययान्त शब्दों के रूप पुल्लिङ्ग में श्रीमत् के समान, नपुंसकलिङ्ग में जगत् के समान और स्त्रीलिङ्ग में नदी के समान बनते हैं। इनके रुप तीनों लिङ्गों में, सभी विभक्तियों और सभी वचनों में होते हैं।

**यथा** :–

| धातु + प्रत्यय = निष्पन्न शब्द | | | प्रथमा के रूप | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | पुल्लिङ्ग | नपुंसकलिङ्ग | स्त्रीलिङ्ग |
| भू + (क्त) त | = | भूत | भूतः | भूतम् | भूता |
| भू + (क्तवतु) तवत् | = | भूतवत् | भूतवान् | भूतवत् | भूतवती |

**अन्य नियम :–**

**(1) सेट् धातुओं में क्त या क्तवतु लगने से पूर्व इट् (इ) का आगम होता है।**

| धातु | क्त प्रत्ययान्त | क्तवतु प्रत्ययान्त |
|---|---|---|
| पठ् | पठित | पठितवत् |
| कथ् | कथित | कथितवत् |
| लिख् | लिखित | लिखितवत् |

**(2) निष्ठा प्रत्यय (क्त, क्तवतु) जुडने पर धातु के प्रारम्भ में स्थित य, र्,ल्, व्, के स्थान में क्रमशः इ, ऋ, लृ, उ बन जाते हैं–**

**यथा** :–

| धातु | क्त | क्तवतु |
|---|---|---|
| वस् | उषित् | उषिवत् |
| वच् | उक्त | उक्तवत् |
| ग्रह् | गृहीत | गृहीतवत् |
| स्वप् | सुप्त | सुप्तवत् |
| यज् | इष्ट | इष्टवत् |

**(3) प्रायः धातु के अन्त में स्थित म् का लोप हो जाता है –**

**यथा** :–

| | | |
|---|---|---|
| गम् | गत् | गतवत् |
| यम् | यत् | यतवत् |
| नम् | नत् | नतवत् |

**(4) क्त और क्तवतु के तकार में भी कभी–कभी कुछ परिवर्तन होते हैं। द् या र् के बाद में आने वाले त् का न् हो जाता है और पूर्ववर्ती द् का भी न् हो जाता है।**

**यथा:–**

| धातु | + | क्त | + | क्तवतु |
|---|---|---|---|---|
| छिद् | | छिन्न | | छिन्नवत् |

| | | |
|---|---|---|
| भिद् | भिन्न | भिन्नवत् |
| जृ | जीर्ण | जीर्णवत् |
| श्रु | शीर्ण | शीर्णवत् |

**(5) निष्ठा का त 'शुष' के बाद आने पर क और पच् के बाद आने पर व हो जाता है।**

**यथा :–** शुष् + त = शुष्कः, शुष्कवत्
पच् + त = पक्वः, पक्ववत्

**(6) क्त और क्तवतु प्रत्ययों से निष्पन्न शब्द विशेषण एवं क्रिया के रूप में प्रयुक्त होते हैं।**

**यथाः–** विशेषण के रुप में – सुप्तः शिशुः।
क्रिया के रुप में – सः पुस्तकं पठितवान्।
तेन पुस्तकं पठितम्।

**(7) क्रिया रूप में क्त प्रत्यय कर्मवाच्य और भाववाच्य में प्रयुक्त होते हैं। इस प्रत्यय से निष्पन्न शब्द के लिङ्ग, वचन और विभक्ति कर्म के अनुसार होते हैं।**

**जैसेः–** त्वया रामायणं पठितम्।

क्तवतु प्रत्यय से निष्पन्न शब्द सदैव कर्तृवाच्य में प्रयोग होते हैं एवं उनके लिङ्ग, वचन और विभक्ति कर्ता के अनुसार होते हैं।

**जैसेः–** बालकः पुस्तकं पठितवान्

## (3) पूर्वकालिक क्रियार्थक

कर या करके अर्थ को व्यक्त करने के लिये धातुओं में क्त्वा (त्वा) और ल्यप् (य) प्रत्यय लगाकर पूर्व कालिक कृदन्त बनाये जाते हैं। या जब एक ही कर्ता कोई एक कार्य समाप्त करके दूसरा कार्य करता है तो पहली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है।

| **यथा :–** धातु | प्रत्यय | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| जि | क्त्वा (त्वा) | जित्वा | जीतकर |
| नी | ,, | नीत्वा | लेकर |

**नियम :–** धातुओं में क्त्वा (त्वा) प्रत्यय जोड़ने के नियम :–

(1) सेट् धातुओं में (इट्) का आगम होता है –

**यथाः–** पठ्–पठित्वा, पत् – पतित्वा, लिख्–लिखित्वा
कथ् – कथयित्वा, भक्ष् –भक्षयित्वा, पूज्–पूजयित्वा

(2) धातुओं में स्थित य्, र्, ल्, व्, का क्रमशः इ, ऋ, लृ, उ हो जाता है –

**यथाः–** यज् – इष्ट्वा, ग्रह्–गृहीत्वा, वद्–उक्त्वा

(3) धातु के अन्त में स्थित म् और न् का प्रायः लोप हो जाता है।

**यथाः–** गम्–गत्वा, नम्–नत्वा, हन्–हत्वा, मन्–मत्वा

(4) धातु के अंतिम वर्ण में परिवर्तन हो जाता है –

च्, ज्,क् :–वच् – उक्त्वा, मुच्–मुक्तवा
त्यज् – त्यक्त्वा, भुज् – भुक्त्वा
च्छ् ष् :– प्रच्छ् – पृष्ट्वा

**(2) ल्यप् (य) :–**

(1) यदि धातु के पूर्व कोई उपसर्ग लगा हो तो ल्यप् प्रत्यय का प्रयोग होता है।
जैसे– आ + नी + ल्यप् (य)– आनीय
प्र + दा + ल्यप् – प्रदाय

(2) धातु का अन्तिम स्वर यदि ह्रस्व हो तो 'य' जोड़ने से पूर्व तुक (त्) का आगम होता है। अर्थात 'य' के स्थान में 'त्य' जुड़ता है।
जैसेः– प्र + कृ + ल्यप् (य) – प्रकृत्य
सम् + चि + ल्यप् (य) – सञ्चित्य
वि + जि + ल्यप् (य) – विजित्य
अधि + इ + ल्यप् (य) – अधीत्य

**(4) उत्तरकालिक – तुमुन् (तुम) –**

'के लिये' का अर्थ व्यक्त करने के लिये तुमुन् (तुम) प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है जिसे उत्तर कालिक, तुमुनवाचक या निमित्तार्थक कृदन्त कहते हैं।

**यथाः–** बालकः पठितुं विद्यालयं गच्छति।

**नियम :–**

(1) जिस क्रिया के साथ तुमुन् प्रत्यय आता है, उसका तथा मुख्य क्रिया का कर्ता एक ही होना चाहिए।
जैसे उपर्युक्त उदाहरण में पठितुम् और गच्छति दोनों क्रिया का कर्ता बालक ही है।

(2) कालवाची शब्दों (काल, समय, बेला आदि) के साथ समान कर्ता न होने पर भी तुमुन् प्रत्यय होता है।
**जैसे :–** गन्तुं कालोऽधुना। पठितुं समयोऽधुना।

(3) धातु के अन्त में स्थित 'म्' के स्थान पर न् हो जाता है–
जैसेः– गम्–गन्तुम्

(4) सेट् धातुओं में इट् (इ) का आगम होता है –
जैसेः– पठ्–पठितुम्, पत्–पतितुम्, हस्–हसितुम्

(5) धातु के अन्त में स्थित इ, उ, ऋ का गुण (ए, ओ, अर्) होता है।
जैसे– जि–जेतुम्, श्रु–श्रोतुम्, कृ–कर्तुम्, हृ–हर्तुम्

## अभ्यासप्रश्नाः

**(1) निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय बताइये**

पठित्वा, हर्तुम्, नमन्, गतः,

**(2) निम्न धातुओं के कृदन्तीय रूप बनाइये।**

दा – तुमुन् वाचक कृदन्त

कृ – भूतकालिक कृदन्त
गम् – वर्तमान कालिक कृदन्त
पठ् – पूर्वकालिकि कृदन्त

## तद्धित

### तरप्, तमप्

तद्धित का अर्थ– तत् + हित, उन प्रयोगों के हित कर। जो प्रत्यय संज्ञा, विशेषण, कृदन्त आदि के साथ लगकर उनके अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं, वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

**जैसेः–** संज्ञा शब्द वसुदेव में अण् प्रत्यय लग कर वासुदेव बनता है।
विशेषण शब्द लघु + तरप् (तर्) = लघुतर
लघु + तमप् (तम्) = लघुत्तम

तरप् (तर्) और ईयसुन् (ईयस्) – आधिक्य बोधक

दोनों में से एक का अतिशय बताने के लिये तरप् (तर्) और ईयसुन् (ईयस्) प्रत्यय प्रयोग होते हैं –

**यथाः–**

| शब्द | तरप् (तर्) से निष्पन्न शब्द | ईयसुन् (ईयस्) से निष्पन्न शब्द |
|---|---|---|
| लघु | लघुतरः | लघीयान् |
| गुरु | गुरुतरः | गरीयान् |
| पटु | पटुतरः | पटीयान् |

तमप् (तम्) और इष्ठन् (इष्ठ्) – अतिशय बोधक

दो से अधिक में से एक का अतिशय दिखलाने के लिये तमप् (तम्) और इष्ठन् (इष्ठ्) प्रत्यय लगते हैं

**यथाः–**

| शब्द | तमप् से निष्पन्न रूप | इष्ठन् से निष्पन्न रूप |
|---|---|---|
| लघु | लघुतमः | लघिष्ठः |
| पटु | पटुतमः | पटिष्ठः |

**सामान्य नियम**

(1) तरप् ईयसुन्, तमप् एवं इष्ठन् प्रत्यय लगने पर जिससे विशेषता बताई जाती है उसमें षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है।

**यथाः–** बालकेषु मोहनः पटुतमः।

(2) ईयसुन् (ईयस्) और इष्ठन् (इष्ठ) प्रत्यय केवल गुणवाचक शब्दों में ही लगते हैं।

(3) तरप् (तर) और तमप् (तम) सर्वत्र लगते हैं।

## सन्धि

'वर्णानां मेलनं सन्धिः' अर्थात दो वणों के परस्पर मेल या दो वर्णों की अत्यन्त समीपता के कारण उनमें जो विकार (परिवर्तन) होता है, उसे सन्धि कहते हैं। जैसे :– विद्या+आलयः = विद्यालयः (आ+आ = आ)

**सन्धि के प्रकार :–** सन्धि मुख्यतः तीन प्रकार की होती है–

(1) स्वर सन्धि (2) व्यञ्जन सन्धि (3) विसर्ग सन्धि

## (1) स्वर सन्धि

स्वर सन्धि वह है जहां दो स्वरों में परस्पर मेल होने से परिवर्तन होता है।

**जैसे :–** विद्या+आलयः = विद्यालयः (आ+आ=आ)

**स्वर सन्धि के प्रकार –** स्वर सन्धि के आठ प्रकार होते हैं :–

(1) दीर्घ स्वर सन्धि (2) गुणस्वर सन्धि (3) वृद्धि स्वर सन्धि (4) यणस्वर सन्धि (5) अयादि स्वर सन्धि (6) पूर्वरूप स्वर सन्धि (7) पररूप स्वर सन्धि (8) प्रकृति भाव स्वर सन्धि

### (1) दीर्घस्वर सन्धि

**परिभाषा :–** यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के बाद क्रमशः ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ आए तो दोनों मिलकर क्रमशः दीर्घ आ,ई,ऊ,ॠ हो जाते हैं।

**उदाहरण :–** कार्य + आलयः = कार्यालयः (अ + आ = आ)
कवि + इन्द्रः = कवीन्द्रः (इ + इ = ई)
भानु + उदयः = भानूदयः (उ + उ = ऊ)
मातृ + ऋणम् = मातॄणम् (ऋ+ऋ=ॠ)

### (2) गुणस्वर सन्धि

**परिभाषा :–** यदि अ, आ के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ आवे तो इनके स्थान पर क्रमशः ए,ओ, अर, अल् हो जाते हैं।

**उदाहरण :–** गण + ईशः = गणेशः (अ + ई = ए)
महा + इन्द्रः = महेन्द्रः (आ + इ = ए)
सूर्य + उदयः = सूर्योदयः (अ + उ = ओ)
महा + ऋषिः = महर्षिः (आ + ऋ = अर्)
तव + ऌकारः = तवल्कारः (अ + ऌ = अल्)

### (3) वृद्धिस्वर सन्धि

**परिभाषा :–** यदि अ या आ के बाद ए या ऐ आवे तो 'ऐ', ओ या औ आने पर 'औ' और ऋ आने पर आर् हो जाता है।

**उदाहरण :–** सदा+एव = सदैव (आ+ए=ऐ)
महा+ओषधिः = महौषधिः (आ+ओ=औ)
उप+ऋच्छति = उपार्च्छति (अ+ऋ=आर्)

### (4) यणस्वर सन्धि

**परिभाषा :–** यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ के बाद असमान स्वर आवे तो उनके स्थान पर क्रमशः य्, व्, र्, ल् हो जाता है।

**उदाहरण :–** यदि+अपि = यद्यपि (इ+अ=य)
सु+आगतम् = स्वागतम् (उ+आ=वा)

पितृ+आदेशः = पित्रादेशः (ऋ+आ=रा)

लृ+अकारः = लकारः (लृ+अ = ल्)

### (5) अयादि स्वर सन्धि

**परिभाषा :–** यदि ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई स्वर आवे तो उनके स्थान पर क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् हो जाता है।

**उदाहरण :–** ने+अनम्=नयनम् (ए+अ=अय्)

नै+अकः=नायकः (ऐ+अ=आय्)

भो+अनम्=भवनम् (ओ+अ=अव्)

पौ+अकः = पावकः (औ+अ=आव्)

### (6) पूर्वरूप स्वर सन्धि

**परिभाषा :–** यदि पद के अन्त में ए और ओ के बाद 'अ' हो तो दोनों मिलकर पूर्वरूप अर्थात ए, ओ हो जाते हैं और 'अ' के स्थान पर अवग्रह (ऽ) हो जाता है।

**उदाहरण :–** वृक्षे+अपि = वृक्षेऽपि (ए+अ=एऽ)

विष्णो+अत्र=विष्णोऽत्र (ओ+अ=ओऽ)

### (7) पररूप स्वर सन्धि

**परिभाषा :–** यदि अकारान्त उपसर्ग के बाद ए या ओ से प्रारम्भ होने वाली धातु हो तो दोनों मिलकर पररूप अर्थात ए या ओ हो जाते हैं।

**उदाहरण :–** प्र+एजते = प्रेजते (अ+ए=ए)

उप+ओषति=उपोषति (अ+ओ=औ)

### (8) प्रकृति भाव स्वर सन्धि

नियमों के अनुसार सन्धि के प्राप्त रहने पर सन्धि नहीं होती है। इसे प्रकृति भाव कहते हैं।

**उदाहरण :–** कवी आगतौ – यहाँ यण स्वर सन्धि नहीं हुई।

अहो अनर्थः – यहाँ पूर्वरूप स्वर सन्धि नहीं हुई।

## (2) व्यञ्जन सन्धि (हल् सन्धि)

**परिभाषा :–** व्यञ्जन के बाद व्यञ्जन अथवा स्वर आने पर इनके मेल से विकार (परिवर्तन) होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं

उदाहरण :– जगत् +नाथः = जगन्नाथ

**नियम :–**

### 1. श्चुत्व (स→श, त वर्ग→च वर्ग) :–

सकार या तवर्ग का शकार या चवर्ग के साथ (आगे या पीछे) योग हो तो स् का श् और तवर्ग का चवर्ग में परिवर्तित हो जाता है।

**उदाहरण :–** मनस्+चलति = मनश्चलति

रामस्+शेते = रामश्शेते

सत्+चरित्रम् = सच्चरित्रम

यज्+ञः = यज्ञः

**2. ष्टुत्व (स्→ष्, तवर्ग→ट वर्ग) :–**

यदि स् या तवर्ग का ष् या टवर्ग के साथ (आगे या पीछे) योग हो तो स् के स्थान में ष् और त वर्ग के स्थान में टवर्ग हो जाता है।

**उदाहरण** :– रामस्+षष्ठः = रामष्षष्ठः
धनुस्+टङ्कारः = धनुष्टङ्कारः
इष्+तः = इष्टः
तत्+टीका = तट्टीका

**3. जश्त्वः–** वर्ग का प्रथमवर्ण→तृतीयवर्ण, चतुर्थवर्ण→तृतीयवर्ण, पद के अन्त में क्, च्, ट्, त, प् के बाद यदि कोई स्वर वर्ण हो अथवा वर्गों के तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण तथा य् , र, ल्, व, हो, तो क्, च्, ट्, त्, प् का क्रमशः ग्, ज्, ड्, द्, ब में बदल जाते हैं।

**उदाहरण** :– वाक्+ईशः = वागीशः
जगत्+ईशः = जगदीशः
बुध्+धिः = बुद्धिः

**4. चर्त्व :–** वर्गों के तृतीय वर्ण के बाद यदि वर्ग का प्रथम और द्वितीय वर्ण एवं श्, ष्, स् हो तो तृतीय वर्ण अपने वर्ग का प्रथम वर्ण हो जाता है।

**उदाहरण** :– दिग्+पालः = दिक्पालः
सद्+कारः = सत्कारः

**5. अनुस्वार :–** (म्, न् ं) –

म् के बाद यदि कोई व्यञ्जन वर्ण आए तो म् के स्थान में अनुस्वार (ं) हो जाता है। इसी तरह न् के बाद यदि अन्तस्थ तथा अनुनासिक को छोड़कर कोई अन्य व्यञ्जन वर्ण आता है तो न् के स्थान पर अनुस्वार (ं) हो जाता है।

**उदाहरण** :– सम्+हारः = संहारः। सम्+योगः=संयोगः
यशान्+सि=यशांसि। मन्+स्यते=मंस्यते

**6. परसवर्ण :– (अनुस्वारपञ्चम वर्ण) –**

यदि अनुस्वार (ं) के बाद यदि स्पर्श वर्ण (क् से म् तक) हो तो अनुस्वार के स्थान में स्पर्श वर्ण के वर्ग का पञ्चम वर्ण हो जाता है।

**उदाहरण** :– सं+तोषः = सन्तोषः। सं+पूर्णम् = सम्पूर्णम्।
अं+कितः = अङ्कितः। शां+तः = शान्तः

**7. लत्व :– (तवर्ग ल्) –**

तवर्ग के बाद ल् आवे तो तवर्ग का ल् हो जाता है। परन्तु न् के बाद ल् के आने पर सानुनासिक लकार (लँ) होता है।

**उदाहरण** :– तत्+लीनः = तल्लीनः
उत्+लङ्घनम् = उल्लङ्घनम्
महान्+लाभः = महाँल्लाभः

**8. छत्व :– (श्→छ्)**

यदि श् के पहले पद के अन्त में स्थित किसी वर्ग का प्रथम, द्वितीय अथवा चतुर्थ वर्ण हो और बाद में कोई स्वर, अन्तःस्थ वर्ण (य्, र्, ल्, व्) हो तो श् के स्थान पर छ् आ जाता है।

**उदाहरण** :– सत्+शास्त्रम्=सच्छास्त्रम्
तत्+श्रुत्वा = तच्छ्रुत्वा

**9. च् का आगम :–**

ह्रस्व स्वर के बाद यदि छ् आए तो छ् के पहले त् का आगम होकर उसे श्चुत्व (च) होता है। किन्तु पद के अन्त में दीर्घ स्वर के बाद छ् आने पर विकल्प से त् (च्) का आगम होता है।

**उदाहरण** :– परि+छेदः=परिच्छेदः
अनु+छेदः=अनुच्छेदः
लक्ष्मी+छाया=लक्ष्मीच्छाया

**10. अनुनासिक वर्णों का आगम :–**

जब पद के अन्त में ङ्, ण्, न् हो और इसके पूर्व कोई ह्रस्व स्वर हो और बाद में कोई भी स्वर आ जाये तब इन अनुनासिक वर्णों को क्रमशः ङ्, ण्, न का आगम् हो जाता है।

**उदाहरण** :– तस्मिन्+एव = तस्मिन्नेव (इन्+ए=इन्ने)
प्रत्यङ्+आत्मा = प्रत्यङ्ङात्मा (अङ् +आ=अङ्ङा)
सुगण्+ईशः = सुगण्णीशः (अण्+ई=अण्णी)

**11. र् का लोप और पूर्व स्वर का दीर्घत्व :–**

र् के बाद यदि र् आवे तो पूर्व र् का लोप हो जाता है और उसके पहले का स्वर का दीर्घ हो जाता है।

**उदाहरण** :– स्वर्+राज्यम् = स्वाराज्यम्
निर्+रसः = नीरसः
गुरुर्+रमते = गुरूरमते

**12. ह् – चतुर्थ वर्ण :–**

यदि वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय या चतुर्थ वर्ण के उपरान्त 'ह्' आए तो वह अपने पहले वर्ण के वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो जाता है।

**उदाहरण** :– वाग्+हरि = वाग्घरिः या वाग्हरिः
उत्+हारः = उद्धारः या उद्हारः
तत्+हितम् = तद्धितम् या तद्हितम्

**13. षत्व विधान :–**

इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ तथा कवर्ग के बाद आदेश एवं प्रत्यय के स् को ष् हो जाता है।

**उदाहरण** :– हरि+सुप् (सु) = हरिषु
साधु+सुप् (सु) = साधुषु
कर्तृ+सुप् (सु) = कर्तृषु

रामे+सुप् (सु) = रामेषु
गो+सुप् (सु) = गोषु
वाक्+सुप् (सु) = वाक्षु

**14. णत्व विधान :–**

र् और ष् के बाद न् को ण हो जाता है। साथ ही यदि ''र् या ष्'' तथा ''न्'' के बीच में स्वर, ह्, य्, व्, र्, कवर्ग तथा पवर्ग में से कोई एक या एक से अधिक वर्ण भी हो तो भी न् को ण् हो जाता है।

**उदाहरण :–** कर्+नः = कर्णः
पुरुषा+नाम् = पुरुषाणाम्
रामे+न = रामेण

## (3) विसर्ग सन्धि

**परिभाषा :–** विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यञ्जन के मिलने से जो विकार उत्पन्न होता है। उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

**यथा :–** नमः+ते=नमस्ते

**नियम :–** इसके प्रमुख नियम निम्नलिखित है :–

**1. सत्व (:श्, ष्, स्)**

(1) विसर्ग (:) के बाद यदि च् या छ् हो विसर्ग का श्, ट् या ठ् आवे तो ष् और त् या थ् आवे तो स् हो जाता है।

**यथा :–**

निः+चल = निश्चल
शिरः+छेदः = शिरच्छेदः
धनुः+टङ्कारः = धनुष्टङ्कारः
मनः + तापः = मनस्तापः

(2) विसर्ग के बाद यदि श्, ष् या स् आए तो विसर्ग का क्रमशः श्, ष् या स् हो जाता है।

**यथा :–**

हरिः + शेते = हरिश्शेते
निः + सन्देहः = निस्सन्देहः

(3) विसर्ग के पहले यदि इ या उ हो और बाद में क्, ख् या प्, फ् में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग के स्थान पर ष् हो जाता है।

**यथाः–**

निः+कपटः = निष्कपटः
दुः+कर्मः = दुष्कर्मः
चतुः+पदः = चतुष्पदः
निः+फलः = निष्फलः

(4) यदि नमः और पुरः के बाद क्, ख् या प्, फ् आए तो विसर्ग का स् हो जाता है।

**यथा :–**

नमः+कारः = नमस्कारः

पुरः+कारः=पुरस्कारः

## 2. उत्व (:––उ)

(1) विसर्ग के पहले यदि अ हो और विसर्ग के बाद भी अ हो तो विसर्ग के स्थान पर उ हो जाता है। इसके बाद गुण तथा पूर्व रूप हो जाता है।

**यथाः–**

सः +अपि = सोऽपि

प्रथमः+अध्यायः + प्रथमोऽध्यायः

(2) विसर्ग के पहले यदि अ हो और बाद में कोई घोष व्यञ्जन (वर्गों के तृतीय, चतुर्थ एवं पञ्चम वर्ण या य्, र् ल्, व्, ह् ) हो तो विसर्ग के स्थान में ओ हो जाता है।

**यथा :–**

तपः + वनम् = तपोवनम्

मनः + रथः = मनोरथः

बालः + गच्छति = बालोगच्छति

## 3. रुत्व (: र् )

यदि विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो तथा बाद में कोई स्वर या घोष् व्यञ्जन हो तो विसर्ग के स्थान में र् हो जाता है।

**यथा :–**

मुनिः + अयम् = मुनिरयम्।

हरिः + आगच्छति = हरिरागच्छति।

पितुः + इच्छा = पितुरिच्छा।

गुरुः + जयति = गुरुर्जयति।

## 4. लोप (:––लोप)

(1) यदि विसर्ग के पहले अ हो और बाद में अ को छोड़ कोई अन्य स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

**यथा :–**

अतः + एव = अत एव। नरः + इव = नर इव

सूर्यः + उदेति = सूर्य उदेति। कुतः + आगतः = कुत आगतः

**विशेष :–** सः और एषः के बाद अ को छोड़ कोई भी वर्ण हो (स्वर या व्यञ्जन) तो इनके विसर्ग का लोप हो जाता है।

**यथा :–** सः + पठति = स पठति।

एषः + इच्छति = एष इच्छति।

(2) यदि विसर्ग के पहले आ हो और विसर्ग के बाद घोष व्यञ्जन या कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

**यथाः–**

छात्राः + आगच्छन्ति = छात्रा आगच्छन्ति
अध्यापकाः + वदन्ति = अध्यापका वदन्ति
देवाः + रक्षन्तु = देवा रक्षन्तु

## अभ्यासप्रश्नाः

**(1) स्वर सन्धि की परिभाषा सोदाहरण लिखिए।**

**(2) सन्धि विच्छेद कर नाम लिखिए।**

विद्यालयः, मात्राज्ञा, सदैव, देवेन्द्रः, नमस्ते, निष्फलः

**(3) निम्नलिखित पदों में सन्धि कीजिए।**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मनः | + | रथः | = | स | + | पठति | = |
| नदी | + | ईशः | = | देव | + | ऋषिः | = |
| तत्र | + | एव | = | जगत् | + | ईशः | = |

**(4) यण् स्वर सन्धि का नियम लिखकर कोई दो उदाहरण दीजिए।**

**(5) व्यञ्जन सन्धि का कोई दो नियम सोदाहरण लिखिये।**

**(6) विसर्ग सन्धि का एक उदाहरण देकर कोई एक नियम स्पष्ट कीजिए।**

## समास

**परिभाषा :–**

दो या दो से अधिक पद कारक चिन्हों को छोड़कर परस्पर मिल जाते हैं तो उस मेल को समास कहते हैं। **यथाः–** नराणां पतिः – नरपतिः

**समासिक पद :–** समास द्वारा बने शब्द को सामासिक पद कहते हैं।

**यथाः–** 'नराणां पतिः – नरपतिः' में नरपतिः सामासिक पद है।

**समास विग्रह :–**

सामासिक पद या समस्त पद को अलग कर उसकी कारक चिन्हों के साथ जब उसे पूर्व जैसे रुप में लिखा जाता है तो उसे समास विग्रह कहते हैं।

**यथाः–** नरपतिः में नराणां पतिः समास विग्रह है।

**प्रकारः–**समास छः प्रकार के होते हैं।

(1) अव्ययीभाव (2) तत्पुरुष (3) कर्मधारय (4) द्विगु (5) द्वन्द (6) बहुब्रीहि

### (1) अव्ययीभाव समास

इस समास में पहला पद अव्यय या उपसर्ग होता है और दूसरा पद प्रायः संज्ञा। इसमें पहला पद प्रधान होता है। समास हो जाने पर समस्त पद अव्यय हो जाता है।

**यथाः–** प्रति दिनम् – दिनं दिनम् – प्रत्येक दिन
यथाशक्तिम् – शक्तिम् अनतिक्रम्य – शक्ति के अनुसार
उपनदी – नद्याः समीपे – नदी के समीप

### (2) तत्पुरुष समास

वह समास जिसमें अन्तिम पद प्रधान होता है और विशेष्य होता है, पहला पद संज्ञा होकर भी विशेषण जैसा रहता है और दोनों पद के बीच कारक चिन्ह का लोप हो जाता है, तत्पुरुष समास कहलाता है।

**यथा :–**

**(1) द्वितीया तत्पुरुष :–**
दुखातीतः – दुखम् अतीतः – दुख से पार गया हुआ

**(2) तृतीया तत्पुरुष :–**
अग्निदग्धः – अग्निना दग्धः – आग से जला हुआ।

**(3) चतुर्थी तत्पुरुष :–**
गुरुदक्षिणा – गुरुवे दक्षिणा – गुरु के लिये दक्षिणा
विप्रधेनुः – विप्राय धेनुः – ब्राह्मण के लिये गाय

**(4) पञ्चमी तत्पुरुष :–**
चौरभयम् – चौरात् भयम् – चोर से भय
सिंहभीतिः – सिंहात् भीतिः – सिंह से भय

**(5) षष्ठी तत्पुरुष :–**
आम्रफलम् – आम्रस्य फलम् – आम का फल
कृष्णभक्तः – कृष्णस्य भक्तः – कृष्ण का भक्त

**(6) सप्तमी तत्पुरुष :–**
कार्यदक्षः – कार्ये दक्षः – कार्य में चतुर
जलमग्नः – जले मग्नः – जल में डूबा हुआ

### (3) कर्मधारय समास

तत्पुरुष में दोनों पद एक ही विभक्ति के नहीं होते हैं परन्तु कर्मधारय समास में दोनों पद एक ही विभक्ति के होते हैं। साथ ही प्रथम पद विशेषण दूसरे पद विशेष्य (संज्ञा) की विशेषता बताता है, जिसे कर्मधारय समास कहते हैं।

**यथाः–**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| कृष्णसर्पः | – | कृष्णः चासौ सर्पः | – | काला सर्प |
| नीलोत्पलम् | – | नीलम् च उत्पलम् | – | नीला कमल |
| घनश्यामः | – | घनः इव श्यामः | – | बादल के समान श्याम |
| महाराजः | – | महान् चासौ राजा | – | महान यह राजा |

### (4) द्विगु समास

कर्मधारय समास में जब प्रथम पद संख्या वाची और द्वितीय पद संज्ञा हो तो वह द्विगु समास होता है। यह समास किसी समूह (समाहार) का द्योतक होता है।

**यथाः–** चतुर्युगम् – चतुर्णां युगानाम् समाहारः – चार युगों का समूह
त्रिलोकः – त्रयाणां लोकानाम् समाहारः – तीन लोकों का समूह
त्रिभुवनम् – त्रयाणां भुवनानाम् समाहारः – तीन भुवनों का समूह

### (5) द्वन्द समास

जब दो या दो से अधिक पद 'च' (और) से जुड़े हों तथा पूर्व और उत्तर पद दोनों प्रधान हो तब द्वन्द समास होता है।

**यथा :–**

रामलक्ष्मणौ – रामश्च लक्ष्मणश्च – राम और लक्ष्मण
पितरौ – पिता च माता च – पिता और माता
हरिहरौ – हरिश्च हरश्च – हरि और हर

### (6) बहुब्रीहि समास

जिस समास में आये (दो या दो से अधिक) पद मिलकर किसी अन्य शब्द के विशेषण स्वरूप और उन पदों के अतिरिक्त अन्य के अर्थ का बोध करावे, उसे बहुब्रीहि समास कहते हैं।

**विशेष** :– (1) अन्य का अर्थ प्रधान होता है ।
(2) विग्रह करते समय 'यत्' शब्द के किसी रूप का प्रयोग किया जाता है।

**यथा :–** चक्रपाणिः – चक्रं पाणौ यस्य सः जिसके हाथ में चक्र हो, अर्थात श्री कृष्ण।
चन्द्रशेखरः – चन्द्रः शेखरे यस्य सः – जिसकी चोटी में चन्द्र है अर्थात् श्री शंकर
पीताम्बरः – पीतं अम्बरं यस्य सः – जिसका पीला वस्त्र है अर्थात श्री विष्णु

## अभ्यासप्रश्नाः

**(1) नीचे लिखे विग्रह युक्त पदों के सामासिक पद बनाकर समास का नाम लिखिये–**

| विग्रह युक्त पद | सामासिक पद | समास का नाम |
|---|---|---|
| राज्ञः पुत्रः | – | – |
| जन्म पर्यन्तम् | – | – |
| पञ्चानां पात्राणां समाहारः | – | – |
| पीतं वस्त्रम् | – | – |
| पतिः च पुत्रः च | – | – |
| लम्बम् उदरम् यस्य सः | – | – |

**(2) निम्न सामासिक पदों का विग्रह कर उनके प्रकार लिखिये।**

| सामासिक पद | विग्रहयुक्त पद | समास का नाम |
|---|---|---|
| मुखचन्द्रः | – | – |

| | | |
|---|---|---|
| वीणापाणिः | – | – |
| त्रिपथः | – | – |
| रामकृष्णौ | – | – |

## अनुवाद के समान नियम

अनुवाद का अर्थ होता है – 'बाद में कहना।' अर्थात् जो बात पहले किसी दूसरी भाषा में कही गयी हो, उसे भाषान्तर द्वारा प्रकट करना अनुवाद है। अनुवाद के लिये सामान्य व्याकरणिक नियमों का ज्ञान आवश्यक है। हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करने के लिये सामान्य नियम इस प्रकार है–

### (1) कर्ता क्रिया का सन्बन्ध :–

जिस पुरुष और वचन में कर्ता होगा, तदनुसार ही धातु (क्रिया) का प्रयोग होता है । जैसे –

सः पठति। (वह पढ़ता है।)
सा पठति। (वह पढ़ती है।)
आवां गच्छावः। (हम दोनों जाते हैं।)
वयं वदामः। (हम सब बोलते हैं।)
सीता चलति। (सीता चलती है।)

### (2) कर्ता और कर्म का प्रयोग :–

कर्ता क्रिया के द्वारा जिस कार्य को करना चाहता है, उसे कर्म कहते हैं। कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। जैसे–

सा रोटिकां खादति। (वह रोटी खाती है।)
बालकाः कन्दुकं खेलन्ति। (बालक गेन्द खेलते हैं)
युवां विद्यालयं गच्छथः। (तुम दोनों विद्यालय जाते हो।)
अहं पुस्तकं पठामि। (मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।)

### (3) विशेषण विशेष्य सम्बन्ध –

जिस लिङ्ग, पुरुष वचन में विशेष्य होगा, उसी लिङ्ग, पुरुष, वचन में विशेषण का प्रयोग होता है। जैसे –

एषा रक्तमाला अस्ति। (यह लाल माला है।)
इमे द्वे रक्तपुष्पे स्तः। (ये दो लाल फूल है।)
इमानि रक्तानि पुष्पाणि सन्ति। (ये लाल फूल हैं।)

## पत्र लेखन

प्रचीन समय में विचारों के आदान–प्रदान के लिए पत्र ही सशक्त माध्यम था। कोई भी व्यक्ति पत्र के माध्यम से ही किसी प्रकार का संदेश दूसरे तक पहुंचाता था। इसमें वह शिष्टाचार का विशेष ध्यान रखता था। यदि समाचार बड़ों के लिए भेजा जाता है, तो उसमें आदरसूचक अभिवादन का शब्द, विनम्र शब्दावली का प्रयोग किया जाता है। यदि छोटों के लिए संदेश हो तो आशीर्वचन के शब्द प्रयोग पर विशेष ध्यान दिया जाता है। पत्र–लेखन में निम्नांकित बातें ध्यातव्य हैं –

1. पत्र लिखते समय पूर्व में ईश्वर की आराधना स्वरूप इष्टदेव को नामांङ्कित करें, ताकि छात्रों में ईश्वर के प्रति श्रद्धा जागृत हो।
2. समाचार प्राप्तकर्त्ता को समाचार प्रेषक का स्थान एवं तिथि मालूम हो ताकि समाचार के अनुरूप उत्तर प्रेषित किया जा सके। इससे विद्यार्थियों में समय सीमा में कार्य पूर्ण करने की प्रवृत्ति जागृत की जा सके।
3. जिसे समाचार पत्र भेजा जाता है उसके लिए यथोचित शिष्टाचार का प्रयोग हो, जिससे छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास हो सके।

## (पितरं प्रति पत्रम्)

श्री गणेशाय नमः

रायपुरम्
२८–०१–०६

श्रीमन्तः पितृमहाभागाः
सादरं प्रणमामि

अत्र अहं कुशलोऽस्मि। भवतः कुशलतायै ईश्वरस्य प्रार्थनां करोमि। इदानीम् अहम् अध्ययनेन संलग्नोऽस्मि। अर्धवार्षिकपरीक्षायां द्वितीयस्थानं अधिगतोऽस्मि। वार्षिकपरीक्षायां प्रथमस्थानं प्राप्तये कठिनपरिश्रमं करोमि। किञ्चित् पुस्तकं क्रयार्थं शतरुप्यकाणां आवश्यकता वर्तते। अतः रूप्यकाणि प्रेषयितुं कृपां करोतु। अत्र अहं स्वस्थचित्तोऽस्मि। मातृभ्यो नमः। अन्यानुजान् शुभाशीः

**भवतः पत्रोत्तरस्य प्रतीक्षारतः**
**भवतः आत्मजः**
**राहुलः**

## प्रधानाध्यापकं प्रति पत्रम्

सेवायाम्,
श्रीमान् प्रधानाध्यापकः
शा.पू.मा. प्रगतिशाला, डौण्डीलोहारा
विषय :– अवकाशहेतोः आवेदनम्।
महोदयः,
सविनयम् आवेदयामि यदहं शीतज्वरेण पीडितोऽस्मि अतः शालाम् आगन्तुम् असमर्थोऽस्मि। एतदर्थं २५–०१–०६ दिनाङ्कात् २७–०१–०६ पर्यन्तम् अवकाशं दातुं कृपां करोतु।
दिनाङ्कः २५–०१–०६

**भवतः आज्ञाकारी शिष्यः**
**शुभम्**

## पुस्तक प्रेषणार्थं पत्रम्

श्रीमन्तः,

सम्पादकमहोदयाः

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान् वाराणसी (उ. प्र.)

**विषय** :– वी.पी. माध्यमेन पुस्तकप्रेषणार्थम्।

मान्यवराः

मह्यं निम्नांकितपुस्तकानाम् आवश्यकता वर्तते।

अतः वी.पी. माध्यमेन अधोलिखितानि पुस्तकानि प्रेषयन्तु ।

धन्यवादः

| पुस्तकानि नामानि | संख्या |
|---|---|
| १. मम व्याकरणम् | १ |
| २. हितोपदेशः | १ |
| ३. पञ्चतन्त्रम् | १ |
| ४. संस्कृतरूपावलिः | १ |
| ५. अनुवाद चन्द्रिका | १ |

**भवदीयः**

**संयोगकुमारः**

कंकालीपारा रायपुरम् (छ०ग०)

## निबन्ध रचना

### 1. विद्यालयः

1. विद्याध्ययनस्य स्थलं विद्यालयः इत्युच्यते।
2. विद्याध्ययनस्य पूर्वं विद्यालये प्रार्थना भवति।
3. वयं गुरुन् प्रणमामः।
4. पश्चात् वयं कक्षायां गत्वा अध्ययनं कुर्मः।
5. विद्यालये एकः विशालः ग्रन्थालयः अस्ति।
6. ग्रन्थालयात् पुस्तकं नीत्वा वयं पठामः।
7. विद्यालये क्रीडाङ्गणः अपि अस्ति।
8. तत्र वयं खेलामः (क्रीड़ामः)।
9. खेलने स्वास्थ्यलाभः भवति।
10. मम कक्षायां पञ्चचत्वारिंशत् छात्राः सन्ति।
11. तेषु त्रिंशत् बालकाः पञ्चदश बालिकाः च।
12. तैः सह भातृभगिनीवत् स्निह्यामः।

### 2. धेनुः

1. धेनुः चतुष्पदा भवति।
2. इयं गौमाता इति कथ्यते।

3. धेनुः दुग्धं ददाति।
4. दुग्धसेवने जनाः पुष्टाः भवन्ति।
5. दुग्धेन दधि, घृतं च निर्मीयते जनैः।
6. गोमयेन जनाः स्वगृहं लिम्पन्ति।
7. कृषि कार्येऽपि गोमयस्य उपयोगः भवन्ति।
8. धेनोर्वत्सः वृषभः इति कथ्यते।
9. कृषकाः वृषभस्य सहाय्येन क्षेत्रं कर्षन्ति।
10. वृषभः भारम् अपि वहति।

## 3. उद्यानम्

1. एतद् उद्यानम् ।
2. उद्याने विविधानि पुष्पाणि विकसन्ति।
3. अत्रवृक्षाः रोहन्ते।
4. वृक्षस्य शोभा पर्णैः पुष्पैः च भवति।
5. वृक्षे खगाः निवसन्ति।
6. ते तत्र नीडानि रचयन्ति।
7. वृक्षाणां शाखा फलानां भारेण नमन्ति।
8. उद्याने लता अपि रोहन्ति।
9. ते वृक्षान् आश्रयन्ति।
10. उपवने एकः तडागः अपि अस्ति।
11. तत्र कमलानि विकसन्ति।
12. मे उद्यानम् अति प्रियम्।
13. अहं तत्र नित्यं भ्रमणाय गच्छामि।

## 4. गृहम्

1. मम गृहं ग्रामस्य मध्ये अस्ति।
2. गृहे वयं चत्वारः सदस्याः निवसामः।
3. मम माता–पिता, अनुज अहं च।
4. मम गृहे एका पाकशाला अस्ति।
5. गृहे पूजा स्थलमपि अस्ति।
6. प्रातरेव स्नात्वा वयं तत्र ईश्वरं पूजयामः।
7. तदनन्तरे मम माता पाकं करोति।
8. सुस्वादु अन्नं मह्यं ददाति।
9. भोजनान्ते अहं पाठशालां गच्छामि।
10. रात्रौ भोजनान्ते अहं पाठं पठित्वा शयनं करोमि।
11. शयनात् पूर्वं मम माता मह्यं दुग्धं यच्छति।

●●●